# भगवत् कृपा

# THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 9 | शनिवार, 26.9.98 | वार्षिक चंदा : 50.00


ब्रह्मवाह

## दीवाली शुभाशीष

स्वामिश्रीजी सत्य हैं

11-11-74

समग्र गुणातीत समाज के सत्संगी बंधुओं को–
नए वर्ष में आध्यात्मिक लेखा-जोखा निकाल कर,
करुणा सागर प.पू. योगी बापा की ओर ही निगाह रखकर,
कृतध्नता बिल्कुल छोड़ कर,
अपने ही सत्य को भीतर में ढूंढकर
'ब्रह्मनिर्माण' का-
**'मैं साकार मुक्तों के संबंध से ब्रह्मस्वरूप ही हूँ'–**
ऐसा दृढ़ संकल्प करें
और
गुणातीत के सच्चे सखा बन कर
सरलता, पवित्रता व नम्रता फैलाकर
अक्षरधाम का ही दिव्य सुख, शांति, बल एवं आनंद प्राप्त करें
और
संबंध वाले सभी को उसका हिस्सेदार बनाएं।
**अति बड़े पुरुषों को हमारा सम्पूर्ण भरोसा आ जाए इस हेतु-**
संबंध वाले मुक्तों के साथ अंतर से- दिल की सच्चाई से मैत्रीभाव दृढ़ करें
व
सिद्धांतिक प्रसन्नता प्राप्त करने हेतु गुरुचरणों में प्रार्थना करें।
तो–आओ,
हम सब मिलकर
सहजानंद की रसघन मूर्ति का परमानंद लूटें
और
वर्तमान में ही जीकर,
अंतर का मौन रख कर,
उस परम दिव्य चेतना को ही आंरभ करने देकर
सभी संबंध वालों को आनंद कराएं।
**ज्ञान की पराकाष्ठा यानि-समग्र सत्संग दिव्य माना जा**ए।
ऐसी निर्विकल्प दृष्टि सभी को प्राप्त हो
और
सुहृद्भाव से हमारा प्रेम सर्वव्यापक बने; जिससे कि –
मिलजुल कर गुरुहरि के कार्य की शोभा बढ़ाएं यही
सभी बड़ों को प्रार्थना।
सभी सुखी रहो-मूर्ति में ही रहकर कार्य करो
और
सभी का मंगल हो
यही अंतर की अभीप्सा सह–
लि. सत्संग सेवक
**दादुकाका के हेतपूर्वक**
**जय श्री स्वामिनारायण !**

# जाकु देखे छाती ठरे ऐसी विभूति..... प.पू. दिनकरभाई !

ओहो ! पहली अक्तुबर....गुरूहरि प.पू. काकाजी के दिव्य मानसपुत्र, सर्व गुणातीत स्वरूपों के परम लाडले व हम सब के प्रेरणास्वरूप प. पू. दिनकरभाई की जयंती !

**पू. दिनकरभाई** ने **हजारों मील दूर रहते हुए भी** प.पू. काकाजी से जो एक अनोखा व दिव्य संबंध दृढ़ किया उससे हम सभी परिचित हैं और ऐसा संबंध करके ही आज वे **प. पू. काकाजी स्वरूप बन गये**.....संबंध में आये हर एक को उनके वर्तन को देखते ही यह अनुभूति होती ही है कि पू. दिनकरभाई ने प.पू.काकाजी का सचमुच सेवन किया है–प.पू. काकाजी को तत्व से पहचाना है। उनको देखकर स्वामी की बात सहज याद आती है–

' देश देशांतर बहोत फिरा, मनुष्य का बहुत सुकाल,
जाकु देखे छाती ठरे, वांका पडया दुकाल।'

सचमुच ! पू. दिनकरभाई को देखते ही प.पू. काकाजी और सभी गुणातीत स्वरूपों की छाती में ठण्डक होती है और तभी तो उनके पास जाकर बैठते ही भीतर में एक सुकून महसूस होता है।

पू.दिनकरभाई आज काकाजी का ही प्रतीक बनकर पल-पल ऐसा जीवन जी रहे हैं जो हम सभी के लिए आदर्शरूप बना है। प.पू. काकाजी की कही बातों को उन्होंने अपने जीवन में ढाला है। प.पू.काकाजी की परावाणी में हमने कई बार सुना कि मूर्ति में रहकर काम क्यों नहीं करते? हर क्रिया मूर्ति की स्मृति करके ही करो.....इस बात का प.पू. काकाजी खूब आग्रह भी रखते.....पू. दिनकरभाई ने प.पू. काकाजी की यह बात पकड़ी और यह बात सिद्ध करके आज स्वयं मूर्तिस्वरूप बन गए हैं।

तो, हे दिनकरभाई ! आप जैसी स्वरूपलक्षी स्थिरता, धैर्य, समता, सरलता, विनम्रता, प्रशांत नीरवता जैसे विशेष गुण और साधु के कल्याणकारी गुण जो आपने प.पू.काकाजी से एक विशिष्ट संबंध करके प्राप्त किए हैं....वह हममें भी प्रगटे और अब व्यापक में प.पू. काकाजी को निहार कर, मूर्ति में ही रहकर प्रत्येक कार्य करते हो जाएं व आपकी तरह हमारे वर्तन से प.पू.काकाजी का परिचय बनें–ऐसा संकल्प आप जरुर करना।

13 जनवरी '95 को प.पू. दिनकरभाई दिल्ली पधारे थे। दिल्ली के मुक्तों को उनकी सुवर्ण जयंती मनाने का-भक्ति अदा करने का अवसर मिला। तब प.पू. गुरुजी ने प.पू.दिनकरभाई के लिए अपने दिल के जो उद्गार व्यक्त किए, उससे प.पू. दिनकरभाई के जीवन का सम्पूर्ण परिचय मिल जाता है। आईये, प.पू. गुरुजी की इस लेखनी को निहारें और प्रार्थना करके सच्ची जयंती मनायें।

स्वामिश्रीजी

**हे दिनकरभाई.....**

आप तो – अमर गुणातीत भावना के ज्योतिर्धर हो।
आपका दर्शन – स्वरूप के स्थितप्रज्ञ का दर्शन सहज कराता है।
आपका वर्तन – पल-पल प्रभु के अस्तित्व का स्वीकार करके, सर्व कर्ता-हर्ता वे प्रगट प्रभु ही हैं, यूं मानकर ब्रह्मस्वरूप के भाव में कैसे जिया जाए-उसकी शिक्षा है।

मुक्तों के साथ
आपका वार्तालाप – मुक्तों के साथ कैसी मर्यादा रखकर बोलना चाहिए–वह दृष्टि देता है।

स्वरूपों के साथ
आपका समर्पण – अपने ईष्ट स्वरूप को हर एक स्वरूप में देखने का एक आदर्श देता है।
आपकी विचारधारा– 'अब हमें मन का आभास भी नहीं रहने देना है'– प.पू. काकाजी की इस बात की आपके पास प्रतीति होती है।
**आपका अस्तित्व** – प.पू. काकाजी का प्रगटपन है;
प.पू. काकाजी का गौरव है;
प.पू. काकाजी की शान है;
प.पू. काकाजी की महिमा है;
और
**प.पू. काकाजी ऐसा कोई वारिसदार तैयार करके गए क्या ?**
**इस प्रश्न का उत्तर है।**

तो, आज जब हम यहाँ आपकी सुवर्ण जयंती मना रहे हैं–
तब महाराज, स्वामी, प.पू. काकाजी और सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में इतनी प्रार्थना कि –
आपने प.पू. काकाजी को तत्त्व से पहचाना है,
सो–
हम सबके लिए आप खूब लम्बे अरसे तक रह कर
हमें ब्रह्मभाव में शराबोर करके हम सबके लिए संकल्प करना,
प्रार्थना करना
कि–
प.पू.काकाजी ने हमें जिस हेतु से स्वयं के पास रखा – निभाया
उस ध्येय की ओर मुड़कर
आपकी तरह हम उन्हें तत्त्व से पहचान कर
उनका परिचय बनें और उन्हें हाश कर दें।
यही–
यहां के सभी मुक्तों की ओर से

आपके ही –
**साधु मुकुंदजीवनदास** और **पू. भाईस्वामिजी** के
प्रणामपूर्वक हार्दिक **जय स्वामिनारायण** !
शुक्रवार, 13 जनवरी, 95

✡✡✡✡✡

# मंगलमय पर्वों की श्रृंखला और अमर गुणातीत भावना

ओहो ! प्रगट के उपासकों के लिए भजन–प्रार्थना करके विशेष आशीर्वाद माँगकर स्वयं को धन्य बनाने एक साथ कई मंगल अवसर–दशहरा, शरदपूर्णिमा, दीवाली, नूतन वर्ष के रूप में नजदीक आ रहे हैं..... भूतकाल को संदतर भूलाकर नित्य नवीन श्रद्धा, उमंग व उत्साह से प्रगट स्वरूप से अपना संबंध दृढ़ करके वर्तमान को आत्मा के सच्चे आंनद से भरकर जीवन की हर एक पल को मंगलमय बनाने के सुनहरे मौके.....

सर्वप्रथम **दशहरा**.....सर्वविदित है कि इस दिन भगवान राम ने रावण को मार कर आसुरी शक्ति पर विजय प्राप्त की थी। भगवान कृष्ण ने भी कंस को मार कर आसुरी शक्तियों का नाश किया। समय के तकाजे पर यह करना आवश्यक ही था। आज तो जीवमात्र के भीतर निरन्तर एक संग्राम चल रहा है..... इन्द्रियों–अंतःकरण, वृत्तियों का विलास दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है व पतन की ओर गिरता जा रहा है..... सामान्य मानवता, विवेक, मर्यादा, पवित्र संस्कार-हमारी संस्कृति भूल कर अहम् में झूलते हुए बस एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में सब लगे हैं.....व्यक्ति दिशाहीन हो गया है..... ऐसे समय में प्रभु रखे सच्चे संत के अलावा और कोई सही दिशा, सच्ची सूझ-संस्कार दे ही नहीं पायेगा। पूर्व के कोई बलिष्ठ संस्कार कहो या प्रभु की अनहद् कृपा से हमारे जीवन में भगवान धारक गुणातीत संतो ने सामने से गरजु बनकर अत्यधिक अपनापन देकर स्थान लिया,जो हमें इन आसुरी तत्त्वों पर विजय दिला कर सर्वदा सुखी करना चाहते हैं। सो, प्रगट के उपासकों का दशहरा यानि-दस इन्द्रियाँ, ग्यारहवें मन को संत के बल से जीतकर उनको प्रगट गुणातीत स्वरूप की ओर मोड़ देना।

दशहरा के पर्व को और अधिक स्मृतिरूप बनाया गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को पार्षदी दीक्षा देकर....तो आइये ! प्रार्थना करें कि हमारे दस इन्द्रियाँ, ग्यारहवें मन को हम भगत्वस्वरूप को सौंपे ताकि वे इन्हें उनकी रीत से वर्ता सकें। हे स्वामी ! हमारे चंचल बन्दर मन को आपके मनन-स्मृतिरूप लगाम से पकड़े रखना..... जन्मों से हमारे भीतर रहा हुआ अहंकार व जड़ता पिघल जाये और चैतन्य का प्रकाश स्थिर बने व हमारे भीतर में रहे दानवों पर विजय प्राप्त करके प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरुपों की अन्तर से प्रसन्नता प्राप्त करके कृतनिश्चयी बनें।

दशहरे के पर्व के बाद 5 अक्टूबर यानि-**शरद्पूर्णिमा** ! गुरु गुणातीत का प्रागट्य दिन जिन्होंने स्वयं तो अनंत अवतारों के अवतारी सर्वोत्कृष्ट स्वरूप श्री सहजानंदस्वामी महाराज को अपने रोम-रोम में अखंडित रखा ही और....साथ ही उनके तद्वद्भाव को पाये गुणातीत पुरुषों द्वारा महाराज का प्रगटीकरण धरती पर अखंडित व शाश्वत् रख दिया..... यूं सनातन धर्म की अखंड और अविनाशी चैतन्य विचारधारा–शरद्पूर्णिमा पर मूल अक्षरब्रह्म के प्राकट्य दिन मानवजाति के लिए यावच्चन्द्रदिवाकरौ अमर व अखंड बनी उन दिव्यविग्रह व्यक्तिस्वरूप गुणातीतानंदस्वामी को करोड़ो वंदन हो। उनके अस्तित्व और व्यक्तित्व से परमतत्त्व की सचेतना पृथ्वी पर प्रगट रही जिससे कोई भी श्रेयार्थी साधक–चाहे फिर वह किसी भी धर्म का, सम्प्रदाय का हो–पर वह आत्यंतिकी साधर्म्यमुक्ति को पाकर ऐसा अद्वैत,फिर भी विशिष्टाद्वैत स्वरूपसाक्षात्कार ब्राह्मीस्थिति के रूप में पाकर ऐसी जीवन मुक्ति सिद्ध करके अक्षरधाम का सुख स्वयं पाकर सभी को दे सकता है। आज भी यह गुणातीत परंपरा प्रकट ज्योर्तिधरों द्वारा चल रही है, जिनके संबंध से हम सभी के चैतन्य का विकास हो रहा है और हम सब दिव्य आनंद का सुख भोग रहे हैं.....

पृथ्वी पर शुद्ध चैतन्य ब्रह्म के मानव देह में प्रगटीकरण को एक अनोखी और अद्भुत बात दर्शाते हुए प.पू. पप्पाजी ने बताया था कि–इनसे पहले मायावेष्टित ब्रह्म बहुत प्रगट हुए, लेकिन शुद्ध चैतन्यब्रह्म का मानवदेह में प्रकटीकरण यदि हुआ हो तो वह दो सौ वर्ष पहले। मानो-आश्रितों के कारण शरीर के भाव टालकर आत्यंतिक कल्याण का द्वार खुल गया। पृथ्वी पर एक बार जिस स्वरूप का प्रकटीकरण हुआ हो उसके अनुसंधान से या उसके अनुलक्ष में उसकी उपासना करने में आए, तो उसका फल अवश्य मिलता है। क्योंकि **एक बार जो प्रकटीकरण हुआ वह जाता नहीं**। जैसे कि–श्रीकृष्ण के प्रकटीकरण के बाद उनके अंतर्धान होने के बावजूद भी शुकदेवजी ने उन्हें धारा था–प्रगट रखा था। तभी परीक्षित के मोह का सात दिन में क्षय किया, वर्ना उस समय सनकादिक जैसे कितने बड़े थे जिन्होंने **वैराटनारायण**-जिसमें **से तो सभी अवतार उत्पन्न हुए**-उनकी उपासना करी थी। **लेकिन** वो **वैराटनारायण का पृथ्वी पर मानवदेह में प्रकटीकरण हुआ नहीं था। तो, उनकी उपासना के बल से सनकादिक द्वारा परीक्षित के मोह का क्षय नहीं हुआ।** सो, जीव के सनातन माँ-बाप ब्रह्म और परब्रह्म–मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी और श्री सहजानंदस्वामी के रूप में पृथ्वी पर मानवदेह में प्रगट हुए और फिर गुणातीतस्वरूप में या उनके तद्वद्भाव को पाए अनादि मुक्त स्वरूपों में भगवान के अखंडित प्रगटपन की महामूली बख़्शिश मानवजाति को देकर कल्याण का मार्ग हमेशा के लिए खुल्ला रखा.....उस **गुणातीत की परम्परा से आए संत से जुड़ जाएं तो कल्याण होने में कोई दिक्कत नहीं रहेगी, क्योंकि उसकी जवाबदारी वह भव्य गुणातीत स्वरूप खुद लेते हैं जो जाता ही नहीं**। गुणातीत की उस परम्परा में

पारस से पारस बने संतों को हमने पहचाना–बापा ने पहचान कराई यह बात कमाल की बन गई !

सच ! महाराज और स्वामी प्रगट ना हुए होते तो विषय के रस और मूलभूत प्रकृति का सम्पूर्ण रूपांतर नहीं होता, जिससे आत्यांतिक कल्याण अशक्य ही रहता। धन्य हो गुरु गुणातीत को कि उन्होंने महाराज के साथ की अद्‌भुत रसबसता का, अटूट एकता का और निर्विकल्पभाव से जुड़ जाने का खुद के जीवन द्वारा सम्यक् और सुन्दर दर्शन कराया। स्वामी को केवल एक महाराज का आधार था, मोहब्बत एक महाराज की ही थी और राग भी एक महाराज का ही था। उनके अन्तर में महाराज के सिवा दूसरा कोई मिले ही नहीं !

सो ही महाराज ने वच.म.50 में कहा–'बड़े-बड़े परमहंस एवं बड़ी-बड़ी सांख्य योगी स्त्रियाँ जो हैं, इन सभी में जगत की कुछ न कुछ लोलुपता दिखाई पड़ती है। परन्तु, हमारे हृदय में तो कभी सपने में भी जगत का कोई संकल्प नहीं उठता।' **महाराज का हृदय यानि–गुणातीत !** ऐसा अलौकिक संबंध हमें अपने प्रकट स्वरूप से करना है।

जीव तो अनादि काल से बद्ध है ही। वह सामान्य व्यवहार में बंधा रहे और प्रभु के व्यवहार में भी बंधा रहे। सत्संग में सेवा करे, वह भी महोब्बत से या कोई राग से या तो देहाभिमान की पुष्टि के लिए ही करता रहता है और ऐसा सत्संग मिलने के बावजूद भी खुद के सत्यों और मान्यताओं के आधार पर ही जीता है.....

सो ही मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने अपनी बातों में कहा–'कई मुक्त तो खेतीबाडी करें ऐसे होते हैं, कई मुक्त गौशाला-धर्मशाला-भवन बनायें ऐसे होते हैं। कई मुक्त मंदिर बनाएं व (सामाजिक) प्रवृत्तियाँ करें ऐसे होते हैं। लेकिन, उपासना व ज्ञान फैलाएं ऐसे अधिक नहीं होते। यानि–साधु का हुन्नर हॉसिल करके सनातन दिव्य तत्त्वों की अभिव्यक्ति करें ऐसे अधिक नहीं होते। सिर्फ प्रभु में ही रहकर प्रभु की प्रसन्नता के लिए जिये व प्रभु को अखंड रखकर उनकी ही प्रेरणा के मुताबिक प्रवृत्ति-निवृत्ति करने वाले विरले कोई ही होते हैं। सामान्य-जीव के लिए यह नामुमकिन ही है, पर वह यदि कोई सिद्ध एकांतिक संत में जुड़ जाये और उसकी मर्जी में बरतने का ठहराव कर ले व वही उसका आधार, वही सर्वस्व और वही प्राण समझ कर उस संत में रसबस हो जाने की रुचि रखे तो नर्सरी का बालक जैसे धीरे-धीरे रीसर्च स्टुडन्ट बनता है वैसे वह भी प्रभु का बालक बन सकता है।

गुणातीत स्वरूप की यह अमर भावना हर एक के अपने ईष्टदेव के प्रकटीकरण के रूप में भगवान स्वामिनारायण ने मानवजाति को केवल करुणा करके बख़्शिश दी। तो, आज के इस महामंगलकारी दिन युगल उपासना के इन परमतत्त्वों से हम सब प्रार्थना करें कि प्रत्यक्ष स्वरूप में उस परात्परस्वरूप के प्राकट्य की परिपक्व निष्ठा हमारे हृदय मंदिर के भीतर सभी को हो जाये व परात्परस्वरूप की अनंतता का-परमानंद का सुख प्राप्त करें।'

तो, हे अक्षरब्रह्म गुणातीतानंदस्वामी ! शरद्‌पूर्णिमा का मंगलकारी दिन-आपका प्रागट्य दिन.....आपने जो 'यावरच्चन्द्र दिवाकरौ' की परम्परा अखंडित रखी, आपका वो ऋण हम कभी ना भूलें–आपकी कृपा से आज गुणातीत स्वरूपों द्वारा आप प्रत्यक्ष रहकर हमें दर्शन, सेवा, समागम, प्रसाद का सुख दे रहे हो–हमें अपना संबंध देकर धन्य किया है। तो, हम भी गुणातीत कबीले की रीति-नीति से जीवन जीकर आपकी शान बढ़ायें !

गुरुहरि योगीजी महाराज ने शरद्‌पूर्णिमा के महा-मंगलकारी दिन को और अधिक चिरस्मरणीय बनाया प.पू.हरिप्रसादस्वामिजी को इसी दिन भागवती दीक्षा देकर। आज हम सभी देख रहे हैं कि गुणातीत परम्परा के ज्योतिर्धर बनकर प.पू. स्वामिजी देश-विदेश में गुरुहरि योगीजी महाराज का नाम रोशन कर रहे हैं। आईये, हम सब प्रार्थना करें कि अब हमारा मन अखंड आपके चरणों में रहे। अखंड ब्रह्मानंद की मस्ती में रहकर, किसी का दोष देखे बिना मुक्तों की प्रभु के भाव से सेवा करके इसी जन्म में पूर्णाहुति कर लें। ऐसी अपार कृपा आज के दिन आप जरुर बरसाना !

साथ ही इन दोनों मंगल पर्वों को पार करती हुई **'दीपावली'-'नयावर्ष'** दीपों की जगमगाहट के साथ आ पहुँचेगा ! दीपावली यानि-आनंद का उत्सव, उमंग-उल्लास का उत्सव, प्रसन्नता का उत्सव, प्रकाश का उत्सव। दीपावली तो केवल एक त्यौहार मात्र नहीं बल्कि एक अनोखा स्नेह मिलन ! राग-द्वेष, वैर-भाव, ईर्ष्या-मत्सर व जीवन में आपस की कटुताएँ दूर करके भीतर में नए वर्ष में नित्य नवीन प्रेम-श्रद्धा और उत्साह से आगे बढ़ने का मंगलकारी दिन ! अज्ञान और मोह के गहन अंधकार में से ज्ञान के प्रकाश की ओर प्रयास !

बाहर के दीये की भव्य सजावट जगत में तो वाह-वाह करा पायेगी, पर हम भूल जाते हैं कि स्वयं प्रकाशित अर्थात् भगवान प्रगटाई दिव्य विभूति-संत ही वास्तव में हमारी आत्मा का दीया प्रगटा सकता है। सच्ची ज्ञानरूपी रोशनी दे सकता है। यदि भीतर में अंधेरा है, तो बाहर जलते लाखों दीयों की रोशनी भी निरर्थक है या वो आनंद क्षणिक व लौकिक शान का दिखावा मात्र है। जबकि आत्मा का आनंद अलौकिक व शाश्वत् है। सच्चे संत के संबंध से ही माया के आवरणों को दूर करके वह प्राप्त किया जा सकता है। हम सब तो अत्यधिक भाग्यशाली इसीलिए हैं क्योंकि हमारे जीवन में ऐसे सच्चे गुणातीत संत आकर बसे हैं। तो उनसे सच्चा आध्यात्मिक

संबंध करके क्यों ना भीतर में ज्ञान का दीपक प्रगटा कर 'सच्ची दीपावली' मनाएं ?

और.....नये वर्ष का दिन यानि–भूतकाल को सदंतर भूल कर वर्तमान का स्वागत करने का दिन ! भजन और प्रार्थना से भविष्य को सजाने का दिन.....हर एक पल को मंगलमय बनाने का दिन.....तो हे प्रभु ! हमारी हर एक ऋतु, हर एक मौसम आपके संबंध से, आनंद से सभर-सभर, भरा-भरा रहे। आपकी स्मृतियों से डूबा रहे.....हमारे जीवन में तू और तेरे भक्तों के सिवा कुछ भी प्रिय नहीं रहे।

अंत में–नए वर्ष की अभ्यर्थना के रूप में बस यही हो कि पल-पल गुरुमुखी रहकर, प्रकृति पुरुष से पर की आध्यात्मिक दृष्टि रखकर, सतत् अंतर्दृष्टि करते रहकर गद्‌गद कंठ से प्रगट गुरुहरि को प्रार्थना और पुकार करें। बाकी फिर जो कुछ भी हो या बने वह सब कुछ प्रगटस्वरूप ही कर रहे हैं यूं मानकर सहर्ष स्वीकार करके प्रगटस्वरूप को तत्त्व से जैसे हैं वैसे पहचानने की कसर टल जाकर उनकी मर्जी के मुताबिक की दिव्य समझदारी का जीवन सहजरूप से जीते बन जाएं यही हमारा जीवन मंत्र और सर्वोत्तम साधना बने !

✡✡✡✡✡

# 'श्रवण, मनन और निदिध्यासन'

- ✷ अपना लीडर(कप्तान) कुछ भी कहे फिर नो आर्गयुमेन्ट्स ! कई बार स्वरूप की कोई आज्ञा हमारे दिमाग मे फिट ना बैठे। पर हम स्वामिनारायण-स्वामिनारायण करते-करते करने लग पड़ेंगे तो यदि हमारे हित में नहीं होगा-जरुरी नहीं होगा तो प्रभु ही प्रेरणा करेंगे.....किसी तरह वो रुकवा देंगे या हमें झेल लेंगे-पकड़ लेंगे.....
- ✷ अपने पंच वर्तमान का लोप होता हो तो वो आज्ञा नहीं पालनी। आज्ञा में विवेक रखना। उस समय स्वरूप को अकेले में पूछ लेना कि महाराज सच में क्या करना है?
- ✷ इतनी क्वालिटी तो अपने अन्दर आनी ही चाहिए कि हमने जिसे बड़े माने हैं, उसे हम कभी 'ना' नहीं करें।
- ✷ मनमाना करने में आदत नहीं डालनी पड़ती। साधु का वचन झेलने की आदत डालनी पड़ती है।
- ✷ स्वरूप किसी को कुछ करने कहे और किसी को ना कहे तो हमें ऐसा विचार नहीं करना चाहिए कि इसे क्यों कहा और इसे क्यों नहीं कहा? क्या हम डॉक्टर को कह सकते हैं कि इसे लाल दवाई क्यों दी और मुझे सफेद क्यों दी? इस प्रकार हर एक के चैतन्य के चार्ट के मुताबिक साधु कार्य करता है।
- ✷ साधु किसी के भी साथ जाने कहे तो ना नहीं करना। हम अगर साधु को ऐसा कह देते हैं कि मुझे तो इसके साथ नहीं जमेगा– हम यह कहने में अपनी शान मानते हैं– पर, असल में तो वह अपना घटियापन है।
- ✷ हम स्वरूप को ना कह ही नहीं सकते.....तुम देखना कि प.पू. पप्पाजी, प.पू.स्वामिजी की तरफ से कोई भी सूचन आयेगा तो मुझसे यह नहीं होगा.....ऐसा तो कभी मेरे मुँह से निकल ही नहीं सकता। प.पू.काकाजी ने कागज लिख-लिख कर, कह-कह कर ऐसी ट्रेनिंग दी-जैसे भीतर में स्टाम्प मार दिया।
- ✷ साधु की कोई आज्ञा माननी हमें डिफीकल्ट लगती हो तो उस समय प्रार्थना करना कि हे महाराज ! मेरा मन नहीं मानता है, पर आप मेरा मन तैयार कर दो..... तैयार कर दो.....
- ✷ बापा भीतर में विराजमान हैं ही। यदि उन्हें भीतर में पूछेंगे तो वे जवाब देंगे ही कि यह करना और यह नहीं करना।
- ✷ सभानता व जाग्रतता की आदत रखनी। सभानता की आदत यानि क्या रखनी? मैं एकदम ठीकठाक व्यवस्थित अच्छा काम कर लूँ। कोई मुझ पर टोका-टोकी ना करे इसलिए ठीक-ठाक संभल कर वर्तूं- वो सभानता नहीं; बल्कि मेरे भीतर प.पू. काकाजी विराजमान हैं ही, सो इनकी प्रार्थना करके-इनसे पूछकर कदम उठाऊँ। इस प्रकार सतत् जाग्रतता की आदत डालते जायें।
- ✷ प.पू. काकाजी हमेशा चाहते कि दो जने मिलकर वर्तो। प.पू. काकाजी ने एक रीत सिखाई थी कि कभी कोई ऐसे निर्णय लेने हों तो अकेले मत लो। दूसरा जो हमारी समकक्षा का हो उसे साथ में लेकर-भले उसका नॅचर-प्रकृति हम से अलग हो, पर उससे मिलकर भगवान को याद करेंगे तो समझ आ ही जायेगी कि क्या करना है। पर हम इस चीज से कतराते रहते हैं कि उसे पूछेगें तो वो बीच में टांग अड़ा देगा। पर, फिर जैसे मूँग में कई बिना गले– 'गांगडु' रह जाते हैं वैसे ही सत्संग में रहने के बावजूद हम कुछ पाये बिना 'गांगडु' ही रह जायेंगे.....
- ✷ एकांतिक धर्म सिद्ध कराने के लिए महाराज ने मुक्तों की ब्रेक रखी होती है, जिससे कि हम कहीं गली-गलियारों में भटक ना जायें।

✡✡✡✡✡

# ❋ निमंत्रण ❋

*21 अक्तुबर'98, बुधवार की सुबह 11.45 को*
*हर साल की तरह–*
*'अनिर्देश' में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज*
*व*
*सभी गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों को*
*वार्षिक महाभोग लगा कर*
*अन्नकूट आरती होगी.....*
*आरती का प्रारंभ अमदावाद के हमारे आत्मीय स्वजन*
*प.भ.एन.जी.पटेल साहेब के करकमलों से होगा।*
*इस मंगलमय अवसर पर*
*सपरिवार ईष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रहने का*
*आपको हार्दिक निमंत्रण है।*

*प्रसादः 12.30 (दोपहर)*

## व्रतोत्सवसूची

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (1) | दि. | 1.10.98 | गुरुवार | – दशहरा, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन<br>प. पू. दिनकरभाई का प्रागट्य दिन |
| (2) | दि. | 2.10.98 | शुक्रवार | – एकादशी, व्रत |
| (3) | दि. | 5.10.98 | सोमवार | – शरद्पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्रागट्य दिन<br>प्र. ब्र.स्व.प.पू.हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन |
| (4) | दि. | 16.10.98 | शुक्रवार | – एकादशी,व्रत |
| (5) | दि. | 17.10.98 | शनिवार | – धनतेरस |
| (6) | दि. | 19.10.98 | सोमवार | – दीपावली,लक्ष्मी-शारदा पूजन |
| (7) | दि. | 21.10.98 | बुधवार | – अन्नकूटोत्सव, नूतनवर्ष प्रारंभ |
| (8) | दि. | 22.10.98 | गुरुवार | – भैयादूज |
| (9) | दि. | 25.10.98 | रविवार | – लाभपंचमी |
| (10) | दि. | 31.10.98 | शनिवार | – प्रबोधिनी एकादशी, व्रत |

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
**If undelivered please return to :—**
Owner, Publisher, Editor :—
**SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI**
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
*Type Setting :* **SHAYOKA Type Setting**
B-351, Sect.-I, Rohini, Delhi-85
*Printed at :* **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12,Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393